डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री २ पत्र ४

टिप्पणी

प्रयोग तत्व

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय जी ने जब 'तार सप्तक' की प्रारम्भिक भूमिका 'विवृति और पुरावृत्ति' में जब यह लिखा कि 'दूसरा मूल सिद्धांत यह था कि संग्रहीत कवि सभी ऐसे होंगे जो कविता को प्रयोग का विषय मानते है — जो यह दावा नहीं करते कि काव्य का सत्य उन्होंने पा लिया है, केवल अन्वेषी ही अपने को मानते हैं, "तो संग्रहीत कवियों ने 'प्रयोग' का वह अर्थ नहीं लिया था जो बाद में विद्वान आलोचकों ने उस पर थोप दिया। काव्याभिव्यक्ति के नये रूपों और शैलियों की खोज की ओर प्रवृत्त होने के बावजूद उन कवियों का आग्रह जिंदगी के यथार्थ के अन्वेषण पर ही अधिक था। उनकी छटपटाहट यह थी कि बदलते हुए परिवेश में अपने विशिष्ट जीवनानुभव को यथा सम्भव ईमानदारी से पहचानकर उसे किसी घिसीपिटी अभिव्यक्ति के बजाय एक अधिक प्रामाणिक, और मौलिक विशिष्ट अभिव्यक्ति द्वारा कैसे प्रस्तुत करें। उनमें से किसी को तिल मात्र भी कल्पना न थी कि बाद में 'लेबिल-मारू' समालोचक न केवल 'प्रयोग' शब्द को ले उड़ेंगे बल्कि उसका अर्थ केवल बाह्य रूप गत 'प्रयोग' लगाएंगे।

इतना निः संकोच कहा जा सकता है कि जिस बदलती हुई काव्यचेतना की अभिव्यक्ति 'तार-सप्तक' के कवियों में मिलती है उसके के अन्य बहुत से तरुण कवियों में थी जिनमें निराला के अतिरिक्त शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ अग्रवाल, और नरेन्द्र शर्मा का उल्लेख किया जा सकता है।